प्रख्यापन

मैं प्रख्यापित करता हूँ कि "जयप्रकाश कर्दम के उपन्यासों का अनुशीलन" लघु शोध-प्रबंध मेरी मौलिक रचना है, जो शिवाजी विश्वविद्यालय कोल्हापुर की एम्.फिल. (हिंदी) उपाधि के लिए प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय या अन्य किसी भी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है।

स्थान : कोल्हापुर।

तिथि : 26/09/08

शोध-छात्र

(श्री . नितीन साहेबराव गायकवाड)

प्राक्कथन

प्राक्कथन

➢ **विषय चयन एवं प्रेरणा :**

प्रस्तुत शोध-विषय के चयन एवं प्रेरणा के मूल में हिंदी दलित साहित्य में रूचि और दलितों के प्रति आस्था रही हैं। किताबें तो पढ़ता ही रहा और किताबों के साथ-साथ पीड़ित मानव को भी पढ़ना पसंद करता रहा, भारतीय समाज व्यवस्था में जो रूढ़ि परंपरा से पीड़ित, शोषित, दलित मानवद्वारा मानव समाज से बहिष्कृतों के प्रति सहानुभूति एवं स्वानुभूति रखता रहा, बचपन से लेकर जो देखा-सुना-भोगा ऐसे समाज के लिए कुछ करने का संकल्प मन में करता रहा, रही बात पढ़ाई की और शोधकार्य के विषय चयन की तो सम्मुख आए - प्रसिद्‌ध दलित साहित्यिक - 'जयप्रकाश कर्दम का 'करूणा' एवं 'छप्पर' उपन्यास। जिसमें लेखक ने डॉ. अम्बेड़कर जी के मानवता, समता, न्याय, बंधुता, शिक्षा, संगठन, संघर्ष आदि के प्रति मौलिक विचारों को तथा आदर्श समाज की संकल्पना एवं गौतम बुद्‌ध के तत्वज्ञान में निहित विश्व कल्याण की विचारधारा को पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत कर हमें सोचने के लिए विवश किया है।

इससे पहले भी मैने मोहनदास नैमिशराय, ओमप्रकाश वाल्मीकि, संजीव, मुल्कराज आनंद, तेजिंदर, अण्णा भाऊ साठे, लक्ष्मण माने, शंकरराव खरात, लक्ष्मण गायकवाड, पार्थ पोलके, दया पवार, किशोर काळे आदि के हिंदी-मराठी साहित्य को पढ़ा है, जयप्रकाश कर्दम ने अपने साहित्य में परिवर्तित समाज जीवन के साथ-साथ दलित संघर्ष और चेतना को एक नयी दिशा और नयी गति देने का कार्य किया है। कर्दम जी की लेखनी पीड़ित, शोषित, उपेक्षित दलितों की बुलंद आवाज बनी है, संघर्षरत दलित परिवर्तन की आशा -आकांक्षाओं को व्यक्त करनेवाला इनका साहित्य समाज जीवन की तस्वीर ही नहीं बल्कि सामाजिक वैचारिक क्रांति का प्रतीक बना है।

महामानव डॉ.बाबासाहब अम्बेडकर इस देश के बहिष्कृत समाज की प्रेरक शक्ति थे, उनके द्वारा लिखी गई राजघटना पीड़ित जन के मन का मानबिंदु थी। उनकी विद्वता इस समाज का अभिमान था। अत: डॉ.अम्बेडकर जी के विचार इस विषय चयन की प्रेरणा है।

श्रदधेय गुरूवर्य, शोध-निर्देशक डॉ यादवराव धुमाळ जी से विचार विमर्श एवं चर्चा की और आप की अनुमति और स्वीकृति के पश्चात प्रस्तुत विषय का चयन कर लघु शोध प्रबंध संपन्न करने का विनम्र प्रयास किया है।

➢ **प्रस्तुत विषय के संदर्भ में अब तक संपन्न शोधकार्य :**

1. विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन से दलित दर्शन और 'छप्पर' उपन्यास पर शोध।
2. केंद्रीय विश्वविद्यालय, हैदराबाद से 'संभइया चद्रुवु' (तेलगु) और 'छप्पर' का तुलनात्मक अध्ययन विषय पर शोध संपन्न।
3. गुरू घासीराम विश्वविद्यालय, बिलासपूर (छत्तीसगढ़) से छप्पर और त्रिशूल का तुलनात्मक अध्ययन-विषय पर शोध संपन्न।

➢ **शोध विषय का महत्व :**

उपर्युक्त शोध कार्य को देखने के पश्चात स्पष्ट होता है कि मेरी जानकारी के अनुसार "जयप्रकाश कर्दम के उपन्यासों का अनुशीलन" इस विषय को लेकर किसी भी शोध कर्ता ने अनुसंधान नहीं किया। मेरे प्रस्तुत लघुशोध-प्रवंध की रचना इस अभाव की पूर्ति का सविनय प्रयास है।

➢ **शोध-कार्य के दौरान उभरे प्रश्न :**

अनुसंधान के प्रारंभ में मेरे मन मे जयप्रकाश कर्दम जी के विवेच्य उपन्यासों के बारे में निम्नांकित प्रश्न उपस्थित हुए थे, वे इस प्रकार हैं -

1. जयप्रकाश कर्दम का व्यक्तित्व एवं कृतित्व कैसा होगा?
2. भारतीय समाज व्यवस्था में दलितों का स्थान कहाँ और कैसे हैं?

3. क्या-विवेच्य उपन्यासों के नायक आधुनिक युवा पीढ़ि के लिए प्रेरणादायी है?

4. जयप्रकाश कर्दम की आधुनिक समाज से क्या अपेक्षा हैं?

5. जयप्रकाश कर्दम प्राय: दलितों को ही अपने उपन्यासों का विषय क्यों बनाते हैं?

6. क्या विवेच्य उपन्यास समाज व्यवस्था में परिवर्तन लाने की माँग करते हैं?

7. विवेच्य उपन्यासों में दलित शोषण के कौन-से आयाम चित्रित हैं?

8. क्या आज भी दलित दमन और शोषण पीड़ित है? और है तो इस शोषण का अंत कब और कैसे होगा? सब समाज आपस में अमन और चैन से कैसे रहेगा?

9. विवेच्य उपन्यासों के अंत मे कर्दम ने किस दृष्टिकोण को स्थापित करने का प्रयास किया है।

10. क्या विवेच्य उपन्यासों में महत् उद्देश्य को सफलता मिली है?

उपर्युक्त इन सभी प्रश्नों के प्राप्त हुए उत्तर प्रस्तुत लघु शोध-प्रवंध के 'उपसंहार' में दिए गए हैं।

➢ **शोध विषय की व्याप्ति :**

लघु शोध-प्रवंध की सीमा निश्चित हो तो कार्य सही दिशा में तथा सुनियोजित होता है। इसी नियम को ध्यान में रखते हुए मैंने अपने लघु शोध-प्रवंध की सीमा निश्चित की है। अध्ययन की सुविधा के लिए मैंने लघु शोध-प्रवंध को सात अध्यायों में विभाजित कर विषय का विवेचन और विश्लेषण किया है -

➢ **प्रथम अध्याय : "जयप्रकाश कर्दम : व्यक्तित्व एवं कृतित्व"**

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत जयप्रकाश कर्दम के जन्म से लेकर अव तक की उनकी जीवन रेखा को अंकित किया है, इसमें जन्म, माता-पिता, भाई-वहन, बचपन, शिक्षा, नौकरी, विवाह, संताने, रहन-सहन तथा खान-पान। साहित्य सृजन का प्रारंभ आदि का संक्षिप्त वस्तुनिष्ठ विवेचन तथा विश्लेषण किया है। व्यक्तित्व के विशेषताओं में जयप्रकाश जी के व्यक्तित्व के विविध पहलुओं को अंकित किया है। साथ ही कृतित्व

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY

में जयप्रकाश जी के साहित्य संसार के बारे में संक्षिप्त जानकारी दी हैं। जयप्रकाश जी को प्राप्त सम्मान तथा पुरस्कारों का भी संक्षिप्त विवरण दर्ज किया है। जयप्रकाश जी के व्यक्तित्व का उनके साहित्य पर पड़े प्रभाव तथा उनके रचना सृजन के केंद्रिय विषय को भी स्पष्ट किया हैं। अत: अध्याय के अंत में प्राप्त निष्कर्ष को प्रस्तुत किया हैं।

➢ **द्वितीय अध्याय : 'विवेच्य उपन्यासों का कथावस्तुगत अनुशीलन'**

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत विवेच्य उपन्यासों की कथावस्तु में प्रथमत: कथावस्तु का महत्त्व विशद किया है। उसके पश्चात जयप्रकाश जी के विवेच्य उपन्यास 'करूणा' और 'छप्पर' में निहित कथ्य, मुख्यकथा, गौणकथा, कथावस्तु का समाज जीवन से जुड़ाव, सवर्ण दलित संघर्ष की स्थितियाँ, उच्च शिक्षित दलितों की पीड़ा आदि का संक्षिप्त रूप में विवेचन किया है। इसके माध्यम से दलित जनजीवन की पीड़ा और बौद्ध तत्वज्ञान को प्रस्तुत किया है।

➢ **तृतीय अध्याय : "विवेच्य उपन्यासों के पात्र एवं चरित्र चित्रण का अनुशीलन"**

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत उपन्यास में पात्र एवं चरित्र-चित्रण का महत्त्व विशद करते हुए जयप्रकाश जी के विवेच्य उपन्यास 'करुणा' और 'छप्पर' में चित्रित मुख्य पात्र, गौण पात्र आदि के चारित्रिक विशेषताओं का विवेचन तथा विश्लेषण किया है। अध्याय के अंत में प्राप्त निष्कर्ष को प्रस्तुत किया है। और यह दिखाया हैं कि दलित पात्र और सवर्ण पात्र की मानसिकता किस प्रकार की हैं।

➢ **चतुर्थ अध्याय : "विवेच्य उपन्यासों में संवाद योजना"**

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत उपन्यास में संवाद योजना का महत्त्व विशद करते हुए जयप्रकाश जी के विवेच्य उपन्यास 'करूणा' और 'छप्पर' में निहित - व्याख्यात्मक संवाद, अवेशात्मक संवाद, नाटकीय संवाद, व्यंग्यात्मक संवाद, गंभीर संवाद, तर्कपूर्ण संवाद, अलंकारिक संवाद, व्यावहारिक संवाद, मार्मिक संवाद तथा संक्षिप्त

संवाद, उद्देश्यपूर्ति में सहायक संवाद, चारित्रिक विशेषताओं को स्पष्ट करनेवाले संवाद, विवरणात्मक संवाद आदि संवाद योजना का विवेचन तथा विश्लेषण किया हैं। अध्याय के अंत में प्राप्त निष्कर्ष को प्रस्तुत किया है। और यह दिखाया हैं कि संवादों के कारण उपन्यास की भाषा में जिवंतता कैसी आई हुई हैं।

➢ **पंचम अध्याय : "विवेच्य उपन्यासों का परिवेशगत अनुशीलन"**

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत परिवेश का अर्थ स्पष्ट करते हुए जयप्रकाश जी के उपन्यासों में निहित परिवेशगत अध्ययन में - सामाजिक परिवेश, आर्थिक परिवेश, राजनीतिक परिवेश, धार्मिक परिवेश आदि परिवेश का विवेचन तथा विश्लेषण किया है। अत: अध्याय के अंत में प्राप्त निष्कर्ष को प्रस्तुत किया है। और यह स्पष्ट किया हैं कि परिवेशानुकूल उपन्यास में चित्रित घटनाएँ कैसे घटित हो चुकी हैं।

➢ **षष्ठ अध्याय : "विवेच्य उपन्यासों का भाषिक, उद्देशगत एवं समस्यागत अनुशीलन"**

प्रस्तुत अध्याय में भाषिक अध्ययन के अंतर्गत भाषा का स्वरूप एवं महत्त्व स्पष्ट करते हुए विवेच्य उपन्यासों में विविध शब्दों के प्रयोग में - तत्सम शब्द, तद्‌भव शब्द, देशज शब्द, विदेशी शब्द, अरबी शब्द, फारसी शब्द, अंग्रेजी शब्द, संस्कृत शब्द, ध्वन्यार्थक शब्द, निरर्थक शब्द, संयुक्त शब्द, अपशब्द आदि का विवरण किया हैं। साथ ही भाषा के सौंदर्य साधनों का प्रयोग, पात्रानुकूल भाषा, उपदेशात्मक भाषा, आत्मकथात्मक भाषा, आक्रमक तथा क्रांतिकारी भाषा का प्रयोग, दलित जीवन के लिए प्रेरणादायी भाषा, वर्णनात्मक भाषा, मुहावरें, लोकोक्तियाँ एवं सुक्तियों आदि का विवेचन तथा विश्लेषण किया है। साथ ही विवेच्य उपन्यासों में निहित उद्देश्यों को स्पष्ट किया हैं। तथा विवेच्य उपन्यासों में निहित समस्याओं में व्यसनाधीनता या नशापान की समस्या, पुलिस शोषण की समस्या, बढ़ती जनसंख्या की समस्या, भूख की समस्या, बाढ़ तथा अकाल की समस्या, मजदूर शोषण की समस्या, सेठ-साहुकार जमींदारों द्‌वारा शोषण की

समस्या, धार्मिक व्यक्ति द्वारा शोषण की समस्या, देवी-देवता तथा अंधविश्वास की समस्या, नारी शोषण की समस्या और दलित विद्रोह की समस्या आदि का विवेचन तथा विश्लेषण किया हैं।

अंत में निष्कर्ष को प्रस्तुत करते हुए यह दिखाया है कि कर्दम जी के उपन्यासों की भाषा में प्रयोगात्मकता के दर्शन होते हैं। और भाषा पात्रानुकूलता का सशक्त नमूना हैं। उपन्यासों का उद्देश्य लेखक के विचारों कि परिपूर्ति करता हैं। और दलित जनजीवन के समस्याओं का हल भी ढूँढने का लेखक ने प्रयास किया है।

➢ **सप्तम अध्याय : "विवेच्य उपन्यासों में चित्रित दलित चेतना"**

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत जयप्रकाश कर्दम जी के विवेच्य उपन्यासों में चित्रित दलित चेतना तथा दलित जागृति का अध्ययन किया है। इसमें दलित शब्द से तात्पर्य, 'चेतना' शब्द की व्युत्पत्ति, अर्थ, परिभाषा, 'चेतना' निर्मिती के कारण तथा स्वरूप एवं महत्त्व आदि को स्पष्ट किया है। साथ ही विवेच्य उपन्यासों - 'करुणा' और 'छप्पर' में चित्रित दलित चेतना के अंतर्गत- आर्थिक चेतना, नारी चेतना, शिक्षा चेतना, धार्मिक चेतना, धार्मिक पाखंडता के खिलाफ चेतना, सम्मानीत तथा स्वाभिमानी जिंदगी जीने की चेतना, राजनीतिक चेतना, समाज कार्य से उत्पन्न चेतना, धर्मपरिवर्तन की चेतना आदि का विवेचन तथा विश्लेषण किया है।अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत करते हुए यह दिखाया हैं की दलितों में उभरी हुई चेतना युगानुकूल और परिवेशानुकूल तथा युगबोध के अनुकूल हैं।

➢ **उपसंहार :**

प्रस्तुत लघ शोध-प्रबंध में पूर्व विवेचित तथा नियोजित अध्यायों के वैज्ञानिक पदधति से अध्ययन करने के उपरांत जो परिनिष्ठित उपलब्ध निष्कर्ष प्राप्त हुआ है उनको 'उपसंहार' के रूप में दर्ज किया हैं। अंत में परिशिष्ट, आधार ग्रंथ सूची, और संदर्भ ग्रंथ सूची दी है।

➢ शोध कार्य की मौलिकता :

1. जयप्रकाश कर्दम जी के विवेच्य उपन्यासों का अनुशीलन' इस विषय पर आज तक किसी भी शोध-कर्ता ने अनुसंधान कार्य नहीं किया है। हिंदी अनुसंधान क्षेत्र में यह अभाव का द्योतक हैं। यह लघु शोध-प्रबंध इस अभाव की पूर्ति की दृष्टि से विशेष महत्त्व रखता है।
2. प्रस्तुत लघुशोध-प्रबंध में गौतम बुद्ध, डॉ.बाबासाहब अम्बेड़कर जी के मानवतावादी मूल्यों का विवेचन तथा विश्लेषण किया है।
3. जयप्रकाश कर्दम जी के विवेच्य उपन्यासों में चित्रित दलित जीवन का सूक्ष्मता और गहराई के साथ चिंतन किया है।
4. विवेच्य उपन्यासों में अम्बेड़करी विचारधारा, गांधीवादी विचारधारा, मार्क्सवादी विचारधारा का सुंदर समन्वय मिलता हैं।
5. दलित समाज के विकास के लिए शिक्षा का महत्त्व विशद करके दलित उद्धार के लिए दलितों को शिक्षित बनाने की अनिवार्यता पर बल दिया है।
6. परिवर्तित समाज जीवन के साथ-साथ सवर्णो की अगली पीढ़ीयों में होनेवाले बदलावों का अंकन किया है।
7. बौद्ध धम्म के सिद्धांतो का विश्वशांति के लिए महत्त्व विशद किया है।
8. सभी जाति-धर्मो में श्रेष्ठ धर्म मानवता की आवश्यकता पर बल दिया है।
9. दलित शोषण के खिलाफ आंदोलन की आवश्यकता का महत्त्व विशद किया है।
10. दलित सर्वहारा मजदूरों के जीवन में स्थित मानवीयता के पहलुओं को उजागर किया है।

कृतज्ञता

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

कृतज्ञता

“समाया है, जिनमें गुण और ज्ञान का सागर

किया हैं, जिन्होंने आँधियारों को उजागर

नतमस्तक है, जिनके सम्मुख सारा जहाँ

किन शब्दों में प्रकट करूँ गुरूवर्य, आपके प्रति आभार यहाँ...”

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध श्रद्धेय आदरणीय गुरुवर्य शोध-निर्देशक डॉ.यादवराव धुमाळ जी, पूर्व प्रपाठक एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग, वेणूताई चव्हाण कॉलेज, कराड के कुशल पथ निर्देशन का फल हैं। प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध को मार्गदर्शक के रूप में आपने आत्मीयता के साथ मौलिक और सही दिशा में मार्गदर्शन किया है। जिससे मैं आपके साहित्यिक शोध दृष्टि के मौलिक विचारों से लाभान्वित हुआ हूँ। आपकी प्रेरणा, उदारता, प्रोत्साहन से ही मैने अपना शोध कार्य संपन्न किया है। जिसमें आप का बहुमुल्य योगदान मिला हुआ हैं। अत: मैं गुरुवर्य और गुरुपत्नी सौ.नयना धुमाळ जी, उनके पुत्र डॉ.क्षितीज धुमाळ जी तथा उनके परिवार के सभी सदस्यों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए आशा ही नहीं बल्कि विश्वास से कामना करता हूँ कि आप के सहयोग और शुभाशिष मुझे भविष्य में भी पग-पग पर मिलते रहें।

हिंदी दलित साहित्यकार जयप्रकाश कर्दम जी का मैं सदैव आभारी रहूँगा। आपने अपनी व्यस्तताओं के बावजूद भी आपका बहुमुल्य समय निकालकर जो सहयोग दिया हैं, इससे मुझे मेरे अनुसंधान कार्य में मौलिकिता लाने में सहायता हुई है। अत: मैं आपका तथा आपके परिवार जनों का सदैव ऋणी रहूँगा।

शिवाजी विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के छात्र प्रिय आदरणीय प्राध्यापक प्रा.डॉ.अर्जुन चव्हाण, डॉ.शोभा निंबाळकर आदि का सहयोग मिला। उनके प्रति मैं कृतज्ञ हूँ।

मेरे लिए अपार कष्ट उठानेवाले मेरी माता गौराई और बड़े भाई सचिन (तात्या) के ऋण शब्दों में अभिव्यक्त कर मैं उनके ऋण से मुक्त नहीं हो सकता। साथ ही मेरी भाभी मंगल जी का भी मैं विशेष आभारी हूँ। मेरे सहयोगी मित्र सिद्धार्थ मुनेश्वर, अध्यापक किरण घोटकर आदि का भी मैं विशेष आभारी हूँ।

इस लघु शोध कार्य को संपन्न करने में अनगिनत मित्रों ने समय-समय पर सहयोग किया है। अत: इन सब का मैं विशेष आभारी हूँ।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध को संपन्न करने के लिए आवश्यक संदर्भ ग्रंथों की प्राप्ति मुझे बॅरिस्टर बाळासाहेब खर्डेकर ग्रंथालय कोल्हापुर से और संगीता प्रकाशन तथा गौतम प्रकाशन, नई दिल्ली से हुई अत: ग्रंथालयों के सभी कर्मचारियों का और प्रकाशकों का मैं आभारी हूँ। हिंदी विभाग के डॉ.मंगेश कोळेकर जी का सहयोग भी इस शोध-कार्य में महत्त्वपूर्ण रहा हैं। अत: इन सब के प्रति मैं विशेष आभारी हूँ।

इस लघु शोध-प्रबंध को आकर्षक एवं यथोचित रूप में टंकन करने वाले मेरे मित्र 'अविज् कॉम्प्युटर्स' के अविनाश कांबळे जी का मैं विशेष आभारी हूँ। साथ ही जीन ज्ञात अज्ञातों की शुभ कामनाएँ मुझे प्राप्त हुई हैं, उन सभी के प्रति आभार प्रकट करता हूँ। भविष्य में इन सभी लोंगो से सहयोग की कामना करते हुए मैं अपना यह लघु शोध-प्रबंध अत्यंत विनम्रता से विद्वानों के सम्मुख परीक्षणार्थ प्रस्तुत करता हूँ।

स्थान : कोल्हापुर।

तिथि :

शोध-छात्र

(नितीन साहेबराव गायकवाड)

....